

(1)

B.A. History Hon's. Part: II

Paper: III, Unit: IV, Date: Lecture No: 23

20. 10. 2020

Lesson: सल्लनत काल में व्यापार-वाणिज्य के कानून

प्रारम्भिक मुद्रणकाल में नवारों के पत्र, मुद्रा की दृष्टिशरा, विकेन्द्रित सामग्री राज्य प्रणाली प्रादेशिक राज्यों के अन्वरत संघर्ष और सर्वोपरि ग्रामीण रुपी प्रणाली की पुनरुत्थान के कारण व्यापार-वाणिज्य का निराशाजनक काल हुआ। उनीं रुदी के पुरामध्य में फिली सूल्लनत की स्थापना के बाद भारत में व्यापार-वाणिज्य का पुनर्स्थान हुआ जो अकाल तीव्र शराब्दी तक लगातार विकसित होता रहा। मुगलों को जब भारत की राजसत्ता मिली जो उस समय भारत की विभिन्न शिल्पों और व्यापार-वाणिज्य के हाथ में काफी व्युत्थान करवाया था।

भारत के व्यापार-वाणिज्य के विकास में प्रथम काल के अन्त से लेकर 10वीं सदी तक की अवधि और हाथ का काल माना जाता है। 10वीं-15वीं शताब्दी के मध्य भारतीय व्यापार को पुनर्जीवन मिला। इस अवधि में सब भारत मुद्रा का चलन हुआ, समुन्नत कृषि के उपरियोगों का विपणन करा, रामराम एवं कुलनी के द्वारा उपग्रहित सामग्रीयों की मात्रा बढ़ी, द्विजीय राज्यों तथा बाहर में फिली सूल्लनत ने बगड़ों के विकास की प्रौद्योगिकी की दशाएँ देश के सभी व्यापारिक संवर्तन घटाया। बगड़ों के विकास के कारण आपात-नियोन व्यापार बढ़ा। दैशराम 9वीं शती से 13वीं शती के अन्त मध्य भारत में व्यापार-वाणिज्य ने रप्तार पकड़ी जो आगे भी जारी रहा।

सूल्लनत काल में राज्य व्यवस्था के संगठित विकास के साथ कुछ विवरण, शिल्प और व्यापार-वाणिज्य का भिकास हुआ। पहली कारण है कि 15वीं सदी में नेपे के द्वारा गाड़ों का विनाश एवं पुरानों का पुनरुत्थान हुआ तथा नवारों की प्रक्रिया तेज हुई। इस उपरियोग और आखर खालों में रुपान्तरण होने लगा, जट्ठुं शिल्पी-कारिगर और शुग्री सामुद्रिक उत्पादन व्यापों में लगे। इसी दृष्टि द्वारा इस दृष्टि का लगाया गया। उल्लेख उत्पादन की मात्रा बढ़ी, जुसे दृष्टि नगरों और विदेशी बाजारों में खपाया गया। इसका फल जाधे रखायानी एवं उत्तर कृष्ण माल के लिए गावों पर निर्गत थे, जबकि आमीण आवादी राहीं आखरी आखरी व्यापारों में बदली गयी। यहाँ 14वीं-15वीं सदियों के दौरान भारत में निर्मित उल्लेख उत्पादन की मात्रा विदेशी में बढ़ी। यहाँ 14वीं-15वीं सदियों के दौरान भारतीय व्यापार-वाणिज्य में नया उद्घाट आया, जो लग्ने समय तक बना रहा।

सूल्लनत काल में रखायानों के आलावा तेल मध्यवर्ती नगर, नारियल, सूपारी गुड़, मिश्री नील, पान, कृपल, मसाले, शूली-रेशाएँ उनीं उपर, भारत एवं लकड़ी विकिर्ण के लालकड़े उपकरण रल रंग, कुंसा, एवं पीतल, दृष्टिन, घारीदानी की बनी सामग्रियां आदि पुनरुत्थ व्यापारिक सामग्रियां थीं, जिनका आवाद और वाद्य व्यापार देता था।

सूल्लनत काल के उपरियोग एवं शिल्प का विविधीकृत हुआ, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न नगरों आरोग्यों या स्थानों के उत्पादों की जगह दृश्य-विदेश में बढ़ी। 16वीं-17वीं शताब्दी तक (व्यापार) के बाहर, मुकुलनाथ के बाकर, सिरसा (हरियाणा) के बी, देवगिरी के मलगढ़, ओराचा एवं झालांड की नदी आदि की गाँव व्यापार में बढ़ी जापड़ी जापड़ी थी।

सूल्लनत काल के गुजरात के बन्दरगाहों से फ्रान्स और फ्रान्स और शब्दी के देशों के व्यापार-विनियोग होता था। फ्रान्स और खनी लाल लाल गुड़ा हुआ था। लाल लाल के बन्दरगाह पर अनेक जोगा और जदा, इन बन्दरगाहों पर गुजरात के रसगांठ के बन्दरगाहों के मलबड़ा की खाड़ी द्वारों से भी व्यापार होता था। रसगांठ के लाल जड़ी भाजा बन्दरगाह में बढ़ी जापड़ी जापड़ी थी।

(1)

B.A. History Hon's. Part: II

Paper: III, Unit: IV, Date: Lecture No: 23

20. 10. 2020

Lesson: सल्लनत काल में व्यापार-वाणिज्य के कानून

प्रारम्भिक मुख्यकाल में नवारों के पालन, मुद्रा की दुर्लभता, विकेन्द्रित सामग्री राज्य प्रणाली प्रादृश्यक राज्यों के अन्वरत संघर्ष और संकेपर शासी प्रणाली की पुनरुत्थान के कारण व्यापार-वाणिज्य का निराशाजनक लाल हुआ। उनीं नवी के पुरामध्य में फिली सल्लनत की स्थापना के बाद भारत में व्यापार-वाणिज्य को पुनर्गठित हुआ जो अबल तीन शासकों द्वारा लगातार विकसित होता रहा। मुगलों को जब भारत की राजसत्ता मिली जो उस समय भारत की व्यापार-वाणिज्य के हाथों में काफी खुशाल लावधार में था।

भारत के व्यापार-वाणिज्य के उत्तिवाल में प्रथम काल के अन्त से लेकर 10वीं सदी तक की अवधि और छाप का काल माना जाता है। 10वीं-15वीं शताब्दी के मध्य भारतीय व्यापार को पुनर्जीवन मिला। इस अवधि में रवि बाहु रवि धातु मुद्रा का घलन हुआ, समुन्नत कृषि प्रृज्ञापित्रों का विपणन के द्वारा रामत्रों रवि कृष्णों के द्वारा उपग्रहिता समितियों की मात्रा बढ़ी द्विजित राज्यों नवारों बाटु में विल्लीस्तरान ने, नगरों के विकास की प्रृत्याएति की द्वारा राजमार्गों तभा परिवहन का विकास हुआ और अब चीन रवा दक्षिणी दक्षिणां देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध गढ़ा हुआ। बन्दरगाहों के विकास के कारण आगाम-निम्न व्यापार छापा। दृश्यांत 9वीं शताब्दी से 13वीं शताब्दी के अंत तक भारत में व्यापार-वाणिज्य ने रघुवर पकड़ी जो कागजी जारी रहा।

सल्लनत काल में राज्य व्यवस्था के संगठित विकास के साथ कृषिविकास, शिल्प और व्यापार-वाणिज्य द्वारा भी विकास हुआ। पहली कारण है कि 10वीं सदी में नवीनीकरण द्वारा दुर्गांचल का विनाश एवं पुरानों का पुनर्गठन हुआ। तभार नगरीकरण की प्रविधि तेज हुई। इस उद्योग का अब आखिरी में रुपान्तरित होने लगा, जट्ठू शिल्प, कारिगर और प्रगति सामुद्रिक उत्पादन व्यापों में लगा। इसी द्वारा व्यापारिक विदेशी वाणियों में व्यवसाय हुआ। इसका भारत जाधौ रविवाहनों एवं डू.२५ कृष्ण माल के लिए गावों पर निर्भर थे, जबकि आमीन आबादी राहीं डारवाजों में तेपार उपजावक्ता सामग्रियों के प्रति आकर्षित हुई। भारत में निर्मित उल्लेख उत्पादों की मात्रा विदेशीों में बढ़ी। इसलिए 14वीं-15वीं सदियों के दौरान भारतीय व्यापार-वाणिज्य में नवा उद्घाट आया, जो लाल लाग्य तक बना रहा।

सल्लनत काल में रवायानों के आलावा तेल प्रक्रिया जैसा नारियल, सुपारी गुड़, मिश्री, नील, पान, कृपले, मसाले, शूटी-रेशाएँ उनीं दृपदी, धातु एवं लकड़ी विकित कलालके उपकरण इल रंग, कुंसा, एवं पीतल, दृष्टिन, घारीदानी जीवनी सामग्रियों आदि पुनर्व्यापारिक सामग्रियों थीं, जिनका आवाहक और वाद्य व्यापार देता था।

सल्लनत काल के उद्योगों एवं शिल्प का विविधता हुआ, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न नगरों भागों को या होता के उत्पादों की नीव देता-विदेश में बढ़ी। 15वीं-16वीं शताब्दी तक व्यापारियों (व्यापार) के बाज, मुकुलान जीवाकर, सिरसा (हरियाणा) के बी, देवगिरी के मलगढ़, ओराचा एवं झालियां जीवाल आदि की गांव व्यापार में बढ़ी आधुनिकी थी।

सल्लनत काल के व्यापार-विनियोग देता था। फारस भी खप्ति लाल लाचार जुड़ा हुआ था। लाल लाचार के तरटपर अद्वा जोगा और जदा, इन व्यापारों में व्यापार देता था। गुजरात के रवसमान के बन्दरगाहों पर मलबद्वा जीवाल देते भी व्यापार देता था। रवसमान के जाल जीवन का बन्दरगाह भी काफी व्यापार रुद्ध रहा।

(2)

मिस्र सीरिया भगवन जिनेवा, वैनिस और निया आदि देशों से व्यापारिक सम्बन्ध छोटे के साथ ही उन कंपनियों से मिले हैं। इस पकार भारत का व्यापारिक सम्बन्ध सिंधु नदी के विभिन्न गांवों से ही नहीं अपितु दूरोपीय देशों के साथ भी था। इसी तरह सिंधु नदी गुजरात के अलावे दक्षिण में मालवार तथा कोरोडल, तटु के कंपनियों से भी समुन्नत थे, जो भारत के दक्षिण-दुखी रवान्ही समिली देशों से व्यापार को सम्भालते थे। यह भारत का समृद्ध सामान्यक बाजार भी जिसमें भारत के पास नियोन के लिए विपुल सामग्रियों भी परतु आपात के लिए खोड़ दासों भा किर द्वितीय सामग्रियों के अलावा हुए गई था। भारत की इस समृद्ध व्यापार से आकर्षित होकर दूरोपीय देशों की ओर भारत की आरंभी। इसमें पहली सफलता मुक्तगालियों को मिली। 1498 में फर्ताल का बादको-द्वारा भारतीय व्यापारियों का पदारपण हुआ। जिसका रवान्ही भारतीय व्यापारिक देशों में रक्त नदी शक्ति का पदारपण हुआ। जिसका रवान्ही भारतीय व्यापारिक देशों में देवल से लेकर गुजरात, होते हुए कोरोडल तक झोर छब्बी बांगाल की रवान्ही में नामुलिहि से भी तक व्यापारिक मार्ग खुल गया। सम्बन्ध भाल में प्रत्यक्ष भारत की तरह भारत का व्यापार दुनिया के कोने-कोने तक पहुंचा।

इस पकार 10वीं सदी में भारतीय व्यापार पुनर्जीवित हुआ और सम्बन्ध भाल में इसने गति पकड़ा। सम्बन्ध के आधिपत्र से परिप्रमात्र भारत का अवरहु व्यापारिक मार्ग रुबल गया। भारत का वाट्य व्यापार परियम मध्य नदी पुर्वी रशिया से जुड़ गया। चिन में देवल से लेकर गुजरात, होते हुए कोरोडल तक झोर छब्बी बांगाल की रवान्ही में नामुलिहि से भी तक व्यापारिक मार्ग खुल गया। सम्बन्ध भाल में प्रत्यक्ष भारत की तरह भारत का व्यापार दुनिया के कोने-कोने तक पहुंचा।

□ डॉ. रामकर जप किशोर चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डॉ. बी. कालेज, जननगढ़।